

कलठोरा वि. (देश.) 1. काली चोंच वाला 2. पुं. काली चोंच वाला सफेद कबूतर।

कलत्थना अ.क्रि. (देश.) 1. व्याकुल होना, विकल होना 2. छटपटाना, दुखी होना उदा. उलत्थें, पलत्थें, कलत्थें कराहें, न पावें कहूँ सोक सिंधून थाहें -पद्माकर ग्रंथा. (हिम्मतबहादुर, 75)।

कलत्र स्त्री. (तत्.) भार्या, पत्नी।

कलत्रोचित वि. (तत्.) नारीसुलभ, नारियों में स्वभावतः होने वाला, स्त्रियोचित।

कलदार पुं. (फा.) 1. रुपए का सिक्का 2. मशीन से ढला हुआ रुपया।

कलदुमा पुं. (फा.) काली पूँछ वाला पक्षी, कलदुमा पक्षी वि. काली पूँछ वाला।

कलधुनि स्त्री. (तद्.) कोमल स्वर में होती हुई मधुर ध्वनि, कल-कल निनाद, कल-कल ध्वनि।

कलधुरी स्त्री. (देश.) नगरों तथा ग्रामों में जाड़े में पथरीले, झाड़-झंखाड़ वाले स्थानों में पाई जाने वाली एक छोटी काली चिड़िया।

कलधूत पुं. (तत्.) दे. कलधौत।

कलधौत पुं. (तत्.) सोना, कंचन, स्वर्ण उदा. "कोटिकहू कलधौत के धाम करील के कुँजन ऊपर वारों" -रसखान (सुजान रसखान 2) 2. चाँदी, 3. मंद एवं मधुर ध्वनि वि. 1. सुनहला, सोने का 2. रुपहला, चाँदी के समान।

कलध्वनि पुं. (तत्.) 1. मंद और मधुर स्वर, हल्की-हल्की मीठी बोली 2. हंस 3. कबूतर 4. कोकिल, कोयल वि. मधुर ध्वनि करने वाला।

कलन पुं. (तत्.) 'भली भाँति समझने तथा जानने का भाव' 1. समझना, जानना 2. हिसाब लगाना या गणना करना, गणन 3. अच्छी तरह जानने की क्रिया 4. दोष 5. अपराध 6. त्रुटि 7. दाग या धब्बा 7. शब्द 8. रचना, बनावट 9. ग्रहण, पकड़ चिकि. गर्भ का प्रथम रूप जो विकसित रूप में 'कलल' पुकारा जाता है गणि. फलनों (functions) के आकलन, समाकलन (intigration) तथा संबंधित संकल्पनाओं और अनुप्रयोगों का

अध्ययन करने वाली गणित की एक विधि या शाखा। (calculus)

कलना¹ स्त्री. (तद्.) 1. ग्रहण, पकड़ 2. ज्ञान, समझ 3. मनोहर रचना, बनावट उदा. देवसृष्टि की सुख विभावरी ताराओं की कलना थी" - प्रसाद।

कलना² स.क्रि. (तद्.) 1. कलन करने की क्रिया, कलन करना, गिनना या हिसाब लगाना 2. जानकारी लेना, जानना 3. पहनना 4. छोड़ना।

कलनाद पुं. (तत्.) 1. मधुर एवं कोमल नाद या स्वर करने वाला जीव, हंस 2. कोमल और मधुर स्वर।

कलप पुं. (तद्.) 1. एक हजार चतुर्युगी का समय या अवधि, ब्रह्मा का एक दिन-कल्प उदा. 'पलक कलप सम जात' -सूरसागर (10/2346), रचना, बनावट 2. समूह, झुंड 3. समर्थ, योग्य 4. समान 3. कलपने की क्रिया या भाव 2. दुःख उदा. 'मेदि कलप तू होहि कलपतरु' -सूरसागर (10/2817)।

कलप-कलप क्रि.वि. (तद्.) 1. हर कल्प में 2. अनेक कल्पों तक, अनेक कल्पों में 3. बहुत काल या लंबी अवधि तक।

कलपतरु पुं. (तद्.) 1. स्वर्ग का वृक्ष जो समुद्र-मंथन से निकले हुए 14 रत्नों में से एक और जो मनवांछित माँग पूरी करने वाला माना जाता है, कल्पवृक्ष 2. एक वृक्ष जो अफ्रीका और भारत के मद्रास (दक्षिण भारत) तथा महाराष्ट्र में है 3. पर्वतों पर पाया जाने वाला मजबूत लकड़ी वाला एक सफेद वृक्ष।

कल्पना स.क्रि. (तत्.-कल्पन) 1. कल्पना करना 2. रचना बनाना, गढ़ना 3. सुव्यवस्थित करना, सजाना 4. सजाने की क्रिया में नीचे-ऊपर रखना 5. काटना उदा. "सोई जानहिं बापुरे जो सिर करहिं कल्प" -जायसी (पद्मावत 123/9)। 6. पेड़ पौधों को कलम करना 7. कलम काटना तथा नए स्थान पर उसे लगाना 8. कुतरना 9. ध्यान करना-"कलपत दोड पर जोरि -सूरसागर (10/477) 2. अ.क्रि. 1. तरसना 2. बिलखना,